

- डूबते को तिनके का सहारा = विपत्ति में पड़े व्यक्ति के लिए तो थोड़ा सहारा भी बहुत होता है।
- ढाक के तीन पात = 1. हमेशा एक ही दशा में रहना।
2. समझाने पर भी कोई असर न पड़ना।
- ढोल के भीतर पोल = किसी व्यक्ति या वस्तु का बाहरी दिखावा अधिक किंतु वास्तविक गुणों का अभाव।
- तू डाल-डाल मैं पात-पात = एक दूसरे से बढ़कर धूर्त या चालाक।
- तेते पाँव पसारिये जेती लांबी सौर = अपने सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना चाहिए, अधिक नहीं।
- थोथा चना बाजे घना = निकम्मा आदमी अधिक बोलता है।
- दीवार के भी कान होते हैं = किसी गुप्त बात को बहुत सावधानी के साथ ही दूसरे से कहना चाहिए ताकि कोई तीसरा व्यक्ति कहीं सुन न लें।
- दुधारू गाय की लात भी अच्छी लगती है या सहनी पड़ती है = अपना हित करने वाले की डॉट-फटकार भी अच्छी लगती है।
- दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम = किसी प्रकार की दुविधा में रहने वाला व्यक्ति दोनों कामों में से किसी को भी नहीं कर पाता।
- दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है = किसी काम में एक बार हानि हो जाने पर व्यक्ति सामान्य काम में भी आवश्यकता से अधिक सावधानी दिखाता है।
- दूध का दूध, पानी का पानी = 1. सच और झूठ को अलग-अलग सिद्ध करना ही सही न्याय है।
2. वास्तविकता को सामने लाना।
- दूर के ढोल सुहावने = दूर से देखने या सुनने पर जो स्थान, गीत, संगीत आदि सुंदर प्रतीत होते हैं, वे पास से वैसे नहीं प्रतीत होते।
- धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का = जिसका कोई निश्चित ठिकाना न हो, परेशान ही रहता है।
- नदी में रहकर मगर से बैर = शक्तिशाली व्यक्ति के साथ रहना हो तो उससे शत्रुता करना अच्छी बात नहीं।